

अत्यंत गोपनीय-केवल आंतरिक एवं सीमित प्रयोग हेतु

सीनियर स्कूल सर्टिफिकेट टर्म – II परीक्षा, 2022

अंक-योजना

हिंदी (ऐच्छिक)

विषय कोड--002

प्रश्न-पत्र कोड--29/1/1

सामान्य निर्देश:-

1. आप जानते हैं कि परीक्षार्थियों के सही और उचित आकलन के लिए उत्तर पुस्तिकाओं का मूल्यांकन एक महत्वपूर्ण प्रक्रिया है। मूल्यांकन में एक छोटी-सी भूल भी गंभीर समस्या को जन्म दे सकती है, जो परीक्षार्थियों के भविष्य, शिक्षा- प्रणाली और अध्यापन-व्यवस्था को भी प्रभावित कर सकती है। इससे बचने के लिए अनुरोध किया जाता है कि मूल्यांकन प्रारंभ करने से पूर्व ही आप मूल्यांकन निर्देशों को पढ़ और समझ लें।
2. मूल्यांकन नीति एक गोपनीय नीति है क्योंकि यह आयोजित परीक्षाओं की गोपनीयता, किये गए मूल्यांकन तथा कई अन्य पहलुओं से संबंधित है। इसका किसी भी तरह से सार्वजनिक रूप से लीक होना परीक्षा- प्रणाली के पटरी से उतरने का कारण बन सकता है और लाखों परीक्षार्थियों के जीवन और भविष्य को प्रभावित कर सकता है। इस नीति /दस्तावेज को किसी को भी साझा करना, किसी पत्रिका में प्रकाशित करना और समाचार पत्र/वेबसाइट आदि में छापना IPC के तहत कार्यवाही को आमंत्रित कर सकता है।
3. मूल्यांकन अंक-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही किया जाना चाहिए, अपनी व्यक्तिगत व्याख्या या किसी अन्य धारणा के अनुसार नहीं। यह अनिवार्य है कि अंक-योजना का अनुपालन पूरी तरह और निष्ठापूर्वक किया जाए। हालाँकि, मूल्यांकन करते समय नवीनतम सूचना और ज्ञान पर आधारित अथवा नवाचार पर आधारित उत्तरों को उनकी सत्यता और उपयुक्तता को परखते हुए पूरे अंक दिए जाएँ।
4. मुख्य परीक्षक प्रत्येक मूल्यांकनकर्ता के द्वारा पहले दिन जाँची गई पाँच उत्तर पुस्तिकाओं के मूल्यांकन की जाँच ध्यानपूर्वक करे और आश्वस्त हो कि मूल्यांकन-योजना में दिए गए निर्देशों के अनुसार ही मूल्यांकन किया जा रहा है। परीक्षकों को बाकी उत्तर- पुस्तिकाएँ तभी दी जाएँ जब वह आश्वस्त हो कि उनके अंकन में कोई भिन्नता नहीं है।
5. परीक्षक सही उत्तर पर सही का निशान (✓) लगाएँ और गलत उत्तर पर गलत का (×)। मूल्यांकन-कर्ता द्वारा ऐसा चिह्न न लगाने से ऐसा समझ में आता है कि उत्तर सही है परंतु उस पर अंक नहीं दिए गए। परीक्षकों द्वारा यह भूल सर्वाधिक की जाती है।

6. यदि किसी प्रश्न का उपभाग हो तो कृपया प्रश्नों के उपभागों के उत्तरों पर दायीं ओर अंक दिए जाएँ। बाद में इन उपभागों के अंकों का योग बायीं ओर के हाशिये में लिखकर उसे गोलाकृत कर दिया जाए। इसका अनुपालन दृढ़तापूर्वक किया जाए।
7. यदि किसी प्रश्न का कोई उपभाग न हो तो बायीं ओर के हाशिये में अंक दिए जाएँ और उन्हें गोलाकृत किया जाए। इसके अनुपालन में भी दृढ़ता बरती जाए।
8. यदि परीक्षार्थी ने किसी प्रश्न का उत्तर दो स्थानों पर लिख दिया है और किसी को काटा नहीं है तो जिस उत्तर पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों, उस पर अंक दें और दूसरे को काट दें। यदि परीक्षार्थी ने अतिरिक्त प्रश्न/प्रश्नों का उत्तर दे दिया है तो जिन उत्तरों पर अधिक अंक प्राप्त हो रहे हों उन्हें ही स्वीकार करें/उन्हीं पर अंक दें।
9. एक ही प्रकार की अशुद्धि बार-बार हो तो उसे अनदेखा करें और उस पर अंक न काटे जाएँ।
10. यहाँ यह ध्यान रखना होगा कि मूल्यांकन में संपूर्ण अंक पैमाने 0 – 40 (उदाहरण 0--40 अंक जैसा कि प्रश्न-पत्र में दिया गया है) का प्रयोग अभीष्ट है अर्थात् परीक्षार्थी ने यदि सभी अपेक्षित उत्तर-बिंदुओं का उल्लेख किया है तो उसे पूरे अंक देने में संकोच न करें।
11. प्रत्येक परीक्षक को पूर्ण कार्य-अवधि में अर्थात् 8 घंटे प्रतिदिन अनिवार्य रूप से मूल्यांकन कार्य करना है और प्रतिदिन मुख्य विषयों की 30 उत्तर-पुस्तिकाएँ तथा अन्य विषयों की 35 उत्तर पुस्तिकाएँ जाँचनी हैं। (विस्तृत विवरण 'स्पॉट गाइडलाइन' में दिया गया है)
12. यह सुनिश्चित करें कि आप निम्नलिखित प्रकार की त्रुटियाँ न करें जो पिछले वर्षों में की जाती रही हैं-
 - उत्तर पुस्तिका में किसी उत्तर या उत्तर के अंश को जाँचे बिना छोड़ देना।
 - उत्तर के लिए निर्धारित अंकों से अधिक अंक देना।
 - उत्तर में दिए गए अंकों का योग ठीक न होना।
 - उत्तर-पुस्तिका के अंदर दिए गए अंकों का आवरण पृष्ठ पर सही अंतरण न होना।
 - आवरण पृष्ठ पर प्रश्नानुसार योग करने में अशुद्धि।
 - योग करने में अंकों और शब्दों में अंतर होना।
 - उत्तर पुस्तिकाओं से ऑनलाइन अंकसूची में सही अंतरण न होना।
 - कुल अंकों के योग में अशुद्धि।
 - उत्तरों पर सही का चिह्न (✓) लगाना किंतु अंक न देना।

MARKING SCHEME
Senior Secondary School Examination
Term-II, 2022

हिन्दी ऐच्छिक (विषय कोड : 002)

[पेपर कोड : 29/1/1]

समय: 2 घंटे

पूर्णांक: 40

सामान्य निर्देश :

- अंक-योजना का उद्देश्य मूल्यांकन को अधिकाधिक वस्तुनिष्ठ बनाना है।
- वर्णनात्मक प्रश्नों के अंक-योजना में दिए गए उत्तर-बिंदु अंतिम नहीं हैं, ये सुझावात्मक एवं सांकेतिक हैं।
- यदि परीक्षार्थी इन संकेत-बिंदुओं से भिन्न, किन्तु उपयुक्त उत्तर दें, तो उसे अंक दिए जाएँ।
- उचित उत्तर दिए जाने पर पूर्णांक भी दिए जा सकते हैं।
- मूल्यांकन कार्य निजी व्याख्या के अनुसार नहीं बल्कि अंक-योजना के निर्देशानुसार ही किया जाए।

Q. No.	EXPECTED ANSWER / VALUE POINTS	Marks
	Set—A1 खण्ड—क	
1.	किसी एक शीर्षक पर लगभग 150 शब्दों में रचनात्मक लेख : <ul style="list-style-type: none">• भूमिका—1 अंक• विषयवस्तु—3 अंक• भाषा—1 अंक	5×1 = 5
2.	दो में से किसी एक विषय पर पत्र लेखन (लगभग 120 शब्दों में) : <ul style="list-style-type: none">• आरंभ और अंत की औपचारिकताएँ—1 अंक• विषयवस्तु—3 अंक• भाषा—1 अंक	5×1 = 5

3.	<p>प्रश्नों के अपेक्षित उत्तर:- (शब्द-सीमा लगभग 50 शब्द)</p> <p>(क)</p> <ul style="list-style-type: none"> • संवाद पात्रों के स्वभाव, चरित्र और पूरी पृष्ठभूमि के अनुकूल होने चाहिए। • संवाद पात्रों के विश्वास, आदर्शों तथा स्थितियों के भी अनुकूल होने चाहिए। • संवाद छोटे, स्वाभाविक और उद्देश्य के प्रति सीधे लक्षित होने चाहिए। • संवादों के अनावश्यक विस्तार से बचना चाहिए। <p><u>(कोई तीन अपेक्षित बिंदु स्वीकार्य)</u></p> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <ul style="list-style-type: none"> • नाटककार में रचनाकार के साथ-साथ कुशल संपादक के गुणों की अपेक्षा इसलिए की जाती है क्योंकि नाटक मंचन के लिए कहानी के रूप को किसी शिल्प, फॉर्म अथवा संरचना के भीतर पिरोना होता है। • नाटककार को घटनाओं, स्थितियों अथवा दृश्यों का चुनाव कर उन्हें क्रमबद्ध करना होता है। • नाटककार को शिल्प या संरचना की पूरी समझ होती है। • नाटककार को पात्र, देशकाल और परिवेश का सम्यक ज्ञान होता है। <p><u>(कोई तीन अपेक्षित बिंदु स्वीकार्य)</u></p> <p>(ख)</p> <p>कहानी में द्वंद्व दो विरोधी तत्त्वों का टकराव या किसी की खोज में आने वाली बाधाओं, अंतर्द्वंद्व के कारण पैदा होता है।</p> <ul style="list-style-type: none"> • द्वंद्व ही कथानक को आगे बढ़ाता है। • द्वंद्व के बिंदुओं की स्पष्टता ही कहानी की सफलता का आधार होती है। • द्वंद्व कहानी को रोचक बनाकर पाठक को अंत तक जोड़े रखता है। <p><u>(कोई दो अपेक्षित बिंदु स्वीकार्य)</u></p> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <ul style="list-style-type: none"> • 'शब्द' को नाटक का शरीर कहा जाता है। • नाटक में कहानी शब्दों के माध्यम से हमारी आँखों के सामने घटित होती है, इसलिए नाटक में शब्द का विशेष महत्त्व होता है। • शब्दों में दृश्य बनाने की क्षमता होती है। • नाटक के शब्द शाब्दिक अर्थ से ज्यादा व्यंजना की ओर ले जाते हैं। <p><u>(कोई दो अपेक्षित बिंदु स्वीकार्य)</u></p>	<p>(3×1) + (2×1) =5</p>
----	--	---------------------------------

4.	<p>प्रश्नों के अपेक्षित उत्तर (शब्द-सीमा लगभग 50 शब्द) :</p> <p>(क)</p> <ul style="list-style-type: none"> समाचार उलटा पिरामिड शैली में लिखे जाते हैं। किसी भी घटना, समस्या या विचार के सबसे महत्वपूर्ण तथ्य, सूचना या जानकारी को सबसे पहले लिखा जाना। उसके बाद उससे कम महत्वपूर्ण जानकारी समाचार के समापन तक यह प्रक्रिया जारी रहना इस शैली में समाचार को तीन भागों में बाँटा जाता है— <div data-bbox="703 633 908 815" data-label="Diagram"> </div> <p style="text-align: center;">अथवा</p> <ul style="list-style-type: none"> गहरी छानबीन, विश्लेषण और व्याख्या के आधार पर समाचार पत्र-पत्रिकाओं के लिए तैयार रिपोर्ट विशेष रिपोर्ट कहलाती है। मौलिक शोध और छानबीन के ज़रिये सार्वजनिक तौर पर पहले से न उपलब्ध सूचनाओं को प्रकाशित करने वाली रिपोर्ट, खोजी रिपोर्ट कहलाती है। जबकि इन-डेप्थ रिपोर्ट सार्वजनिक तौर पर उपलब्ध तथ्यों, सूचनाओं, आँकड़ों की छानबीन के आधार पर तैयार की जाती है। <p>(ख)</p> <ul style="list-style-type: none"> फ़ीचर का प्रारंभ आकर्षक और उत्सुकता पैदा करनेवाला होना चाहिए। फ़ीचर का प्रारंभ, मध्य और अंत सहज और स्वाभाविक तरीके से एक साथ बँधा होना चाहिए। पैराग्राफ़ छोटे होने चाहिए। फ़ीचर की भाषा सरल, रूपात्मक और मन को छूने वाली होनी चाहिए। <p style="text-align: center;">अथवा</p> <p>दिलचस्पी/रुचि और ज्ञान को ध्यान में रखकर संवाददाताओं के बीच काम का बँटवारा 'बीट' कहलाता है। जैसे :</p> <p>अपराध जगत् से जुड़े रिपोर्टर को अपने शहर या क्षेत्र में घटने वाली आपराधिक घटनाओं की रिपोर्टिंग करनी होती है।</p> <p><u>(अन्य उचित उदाहरण भी स्वीकार्य हैं)</u></p>	<p>(3×1)+ (2×1) = 5</p>

	खण्ड—ख	
5.	<p>किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग 50--60 शब्द) :</p> <p>(क) भाव-सौन्दर्य—</p> <ul style="list-style-type: none"> • राम वनगमन के पश्चात् कौशल्या की स्थिति का वर्णन • दीवार पर अंकित चित्र की तरह कौशल्या का जड़ हो जाना • मोरनी की तरह उदास हो जाना <p>शिल्प-सौन्दर्य —</p> <ul style="list-style-type: none"> • ब्रजभाषा • वियोग वात्सल्य रस, करुण रस • अनुप्रास, उपमा अलंकार • गयात्मक शैली आदि <p>(ख) • राजा रत्नसेन की अनुपस्थिति में रानी नागमती की विरह-वेदना का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन</p> <ul style="list-style-type: none"> • भौरे और काग के माध्यम से नागमती द्वारा रत्नसेन को संदेश भेजना • विरह की आग में जलने से उठने वाले धुएँ के कारण काग और भौरे का काला पड़ जाना <p>(ग) • राधा-कृष्ण के माध्यम से लौकिक प्रेम का चित्रण</p> <ul style="list-style-type: none"> • सखियों का आपसी संवाद • प्रेम की अभिव्यक्ति के लिए राजा शिवसिंह और लखिमा देवी का उल्लेख • लोक व्यवहार के माध्यम से मानवीय प्रेम की अभिव्यक्ति 	3×2 = 6

6.	<p>किसी एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग 30-40 शब्द) :</p> <p>(क) • राम के प्रति अगाध प्रेम</p> <p>• भावुकता की पराकाष्ठा</p> <p>• राम के प्रति समर्पण का भाव</p> <p>• राम के साथ बिताए समय को याद करना</p> <p>• भावातिरेक में स्वयं को सभी के दुखों का मूल समझना</p> <p>(ख) • नायिका की विरह दशा को व्यक्त करने के लिए</p> <p>• जैसे कृष्ण पक्ष की चतुर्दशी तक आते-आते चाँद के आकार और चमक में कमी आने लगती है, वैसे ही नायिका का कृशकाय होना</p>	2×1 = 2
7.	<p>किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग 50-60 शब्द) :</p> <p>(क) • सत्ता का, व्यवस्था का, शक्तिशाली व्यक्ति का</p> <p>• सुविधाभोगियों, छद्म क्रांतिकारियों, अहिंसावादियों और सह-अस्तित्ववादियों के ढोंग पर व्यंग्य किया है</p> <p>(ख) • सिंगरौली से मनुष्य के विस्थापन के विरोध में पेड़ों के सूख जाने के रूप में</p> <p>• सिंगरौली की अपार खनिज संपदा पर सत्ताधारियों और उद्योगपतियों की नज़र</p> <p>• प्रकृति को नष्ट कर कोयले की खदानों और उन पर आधारित ताप विद्युत् गृह की शृंखला का बनना</p> <p>• प्राकृतिक संपदा का अंधाधुन दोहन व औद्योगीकरण</p> <p>(ग) • मंदिर में मनोकामना की गाँठ बाँधकर नीचे आना</p> <p>• संभव और पारो का मिलना</p> <p>• मन की बात का पूरा होना</p>	3×2 = 6
8.	<p>किसी एक प्रश्न का उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग 30-40 शब्द) :</p> <p>(क) • निरंकुश सत्ता स्थापित करने के लिए अंधी, गूँगी और बहरी प्रजा राजा को पसंद</p> <p>• जनता के प्रश्न और विरोध पसंद नहीं होना</p> <p>• निर्विरोध शासन की इच्छा</p> <p>(ख) • प्राकृतिक साधन संपन्न क्षेत्र सिंगरौली का उजड़ना</p> <p>• हँसते, खेलते, काम करते लोगों का अपने मूल परिवेश से विस्थापित होने के लिए विवश होना</p>	2×1 = 2

	<ul style="list-style-type: none"> • प्राकृतिक मनोरम दृश्य के उजड़ने से उत्पन्न दुख 	
9.	<p>किन्हीं दो प्रश्नों के उत्तर अपेक्षित (शब्द-सीमा लगभग 30-40 शब्द) :</p> <p>(क) मालवा की धरती की विशेषता:-</p> <ul style="list-style-type: none"> • साधन-संपन्न धरती • भोजन और पानी की अधिकता • सुख-समृद्धि और संपन्नता से परिपूर्ण <p>(ख) लेखक को अपने गाँव की उस औरत की याद हो आई जिसके सौंदर्य पर वह लगभग दस वर्ष की उम्र में मुग्ध हो गया था, क्योंकि उस औरत के जीवन में भी तुमरी की नायिका की तरह वियोग की घनी छाया थी। अपने पति के साथ उसकी कभी भेंट नहीं हुई थी।</p> <p>(ग)</p> <ul style="list-style-type: none"> • राजस्थान की चटक धूप की जगह बादलों से भरा आसमान था। • चौमासा अभी पूरी तरह गया नहीं था। • जगह-जगह पानी नदी-नालों और तालाबों के रूप में बरसाती पानी विद्यमान था। • सर्वत्र जीवंतता थी। 	<p>2×2 =</p> <p>4</p>

* * *